आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021

Received: 12\12\2021; Accepted: 14\12\2021; Published: 24\12\2021

स्मृतिशेष

डॉ. एस. शोभना, मन्नु भंडारी के साहित्यिक अवदान की चर्चा, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021,(184-185)

मन्नु भंडारी के साहित्यिक अवदान की चर्चा

रजनीगंधा की **दीपा** और **स्वामी** की **सौदामिनी** जैसे पात्र को सभी जानते है लेकिन हम यह नहीं जानते वैसे पात्रों के रचियता मन्नु भंडारीजी है, जिन्होंने हिंदी साहित्य जगत को व्यावहारिक एवं निर्भीक नायिकाएँ दीं है। जिनकी कहानियों पर लोकप्रिय फिल्में **रजनीगंधा (1974)** और **स्वामी (1977)** आधारित थीं। उनका निधन 15/11/2021 को गुड़गांव में हुआ। वह 90 वर्ष की थीं। स्वतंत्र भारत के हिंदी साहित्य पर हावी होने वाले "नई कहानी आंदोलन" के सूत्रधारों में मन्नूजी भी एक थी। मन्नु भंडारी के उपन्यास -" **आपका बंटी, महाबोज** और कहानियाँ **एक प्लेट सैलाब, तीन निगाहों की एक तस्वीर, त्रिशंकु और आँखों देखा झूठ**" आदि ने नई भारत में उभर रही मध्यमवर्ग और व्यक्तिवादी चिंतन से ग्रसित युवाओं के यथार्थ को बताया है।

स्न 1931 मध्यप्रदेश में मन्नुजी का जन्म अजमेर के एक साहित्यिक घराने में हुआ। उनके पिता सुखसम्पत राय भंडारी एक स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने पहली बार अंग्रेजी से हिंदी और अंग्रेजी से मराठी में शब्दकोशों को लिखा था। **"मैं हार गई"** भंडारी जी की पहली कहानी है जिसे उन्होंने 1957 को कलमबद्ध किया। उन्होंने अपने पति लेखक राजेंद्र यादव के साथ **"एक इंच मुस्कान"** पर काम किया था। हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रभात रंजन कहते है-" यह याद रखनेवाली बात है कि मन्नुजी ने हिंदी साहित्य जगत को ऐसी नायिकाएँ दी जो अत्यधिक व्यावहारिक और साहसी थीं, अपने निर्णय खुद लिया करती थी और वे कामकाजी महिलाएं थी। यह 60-70 दशक में भंडारी जी ने लिखा है। जो उस समय बहुत नया था। हमने ऐसी नायिका को पहले कभी देखा या सुना नहीं।

मन्नु भंडारी कोलकत्ता विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई पूरा की और आगे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कोलकत्ता के बालीगंज शिक्षा सदन में हिंदी शिक्षक के रूप

में अपना केरियर शुरू किया था और बाद में 1991 तक मिरांडा हॉउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य पढ़ा रही थीं। मन्नु जी का विवाह संपादक एवं लेखक राजेंद्र यादव से हुआ, जो खुद एक बहुआयामी साहित्यकार थे। लेकिन मन्नुजी ने कभी भी अपने पति की ख्याति में छिपी नहीं। उन्होंने हमेशा अपना अलग पहचान बनाया रखा था। **दी बेस्ट ऑफ़ मन्नू भंडारी: दी वाइज वुमन एंड अदर स्टोरीज़** के अपने परिचय में, लेखिका **नमिता गोखले** लिखती है, - " वह अपनी पति की प्रसिद्धि के छाया में कभी भी नहीं छुपी, बल्कि दृढ़ता से खुद अपना अलग पहचान बनाया था। उनके आसपास का साहित्यिक परिवेश उत्साह के साथ हमेशा जीवित रहा।" निर्मल वर्मा, मोहन राकेश, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, भीष्म साहनी, उषा प्रियम्वदा जैसे महान लेखक के साथ वह खुद अपने पति राजेंद्र यादव के साथ निश्चित ही अपने समय के आख्यानों की नयी व्याख्या कर रही थी। अक्सर भंडारी जी को उनकी दृढ़ नायिका पात्रों के लिए याद किया जाता है। उनकी कहानी - **"यह सच है"** -दो प्रमियों के बीच फटी एक महिला का चित्रण करता है। उनकी उपन्यास - **"आपका बंटी"** माता-पिता की तलाक के कारण पीड़ित बच्चों की दयनीय दशा को चित्रित करती है। वैसे **"महाबोज"** राजनीतिक अपराध के गठजोड़ के बारे में बात करती है जो बेलछी नरसंहार पर आधारित थी।

लेखक और पत्रकार मृणाल पांडे लिखती है - " मन्नु भंडारी एक प्रतिभाशाली लेखिका थी, मैं उन्हें स्त्रीवादी लेखिका नहीं मानूंगी। उनका विवाह राजेंद्र यादव से हुआ जो कभी-कभी एक मुश्किल पति भी थे। एक प्रतिभाशाली जोड़ी, जिनके साहित्यिक शैली भिन्न थी। मन्नुजी अपने तरीके से बहुत अधिक सफ़ल रही और उनके कामों का रूपांतरण फिल्मों में भी हुआ है।"

भले ही मन्नु भंडारी हिंदी साहित्य के सबसे वरिष्ठ लेखकों में से है और उन्होंने कई ग्रीष्मकाल देखें हैं, उनके लेखन और उनका पात्र हमेशा समकालीन रहें हैं और पाठकों की वर्तमान पीढ़ी के लिए हमेशा नए विचारों और समकालीन विषयों को जन्म देती है। वह अपने आसंख्य प्रशंसकों और छात्रों के बीच अपने लेखन के माध्यम से हमेशा अमर रहेंगी।

- डॉ. एस. शोभना

****